



आज का तापमान

शिवला	12.2 ल्ड्स	21.0 अधि
घर्मशाला	16.0 ल्ड्स	26.8 अधि
बाजार		
सेंसेक्स	73738.45	
निपटी	22368.00	

तापमान 73,830 | गंगा 83,000

आरएनआई नं. HPHIN01099



- 9.5 ग्राम विट्रे के साथ चंडीगढ़ का युवक गिरफ्तार
- पालघर भूमाल: युवती के स्वास्थ्य में सुधार, सर्व खाना खाने तभी

पृष्ठ 2 पर पढ़ें

कांगड़ा | बुधवार, 24 अप्रैल, 2024 | 12 बैशाख, विक्रमी संवत् 2081 | वर्ष 1, अंक 126, कुल पृष्ठ 14 | मूल्य: 5 रुपए



करे हर सीमा पार

follow us on: [f](#) [g](#) [p](#) 8894521702

पृष्ठ 5 पर पढ़ें

पृष्ठ 7 पर पढ़ें



पृष्ठ 10 पर पढ़ें



पृष्ठ 10 पर पढ़ें

आज का मैच



दिल्ली कैपिटल्स गुजरात टाइटन्स

दृश्य: दिल्ली, समय: शाम 7:30 बजे

न्यूज शॉट्स

मुंबई एयरपोर्ट पर 6.46 करोड़ के टीटे-साने के साथ 4 गिरफ्तार



मुंबई एयरपोर्ट पर 6.46 करोड़ के टीटे-साने के साथ 4 गिरफ्तार

मुंबई। मुंबई एयरपोर्ट पर कर्टम विभाग ने हीरा और सोना जब्त किया है।

चार लोग बूझते हुए क्रेटर

में हीरा और चीर में सोना विपक्षर ला रहे थे। कर्टम विभाग ने खुफिया जानकारी मिलने के बाद छापेमारी

पर आरेकर निशाचर साधा।

मुंबई 4.6 करोड़ रुपए मूल्य का राष्ट्र-सोना जब्त किया। चार लोगों को गिरफ्तार किया है।

के. कविता को सात मई तक

न्यायिक हिरासत में भेजा

वह दिल्ली। दिल्ली के राजउ

एवेन्यू कोर्ट की स्पेशल जज का बोर्डी विवाह के बारे में भेज दिया है।

मंगलवार के बारे में भी बोर्डी विवाह के बारे में भेज दिया है।

सीबीआई ने के. कविता को

सीबीआई ने के. कविता को

के. कविता को 11 अप्रैल को गिरफ्तार किया था। सीबीआई

के मुताबिक दिल्ली अबकारी घोटाला मामले में के.

कविता भी साजिश में शाफिल थी।

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे

भूकंप के 80 से ज्यादा झटके

ताइवान में एक रात में लगे



नेताओं के बिंगड़े बोल

लो

कंत्रं के महापर्व में सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच जुबानी जंग पहले से भी ज्यादा तेज हो गई है। अरोप-प्रत्यारोपों का दौर ऐसा चल रहा है, जैसे भारत-पाकिस्तान का युद्ध हो रहा है।

इस चहते सियासी परें को देखकर ऐसा आभास हो रहा है कि मूद्दों से भटक गए हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के देखास के बाद कांग्रेस भी आक्रामक हो गई है। दरअसल, मोदी ने कहा था कि अगर कांग्रेस केंद्र में सत्ता में आती है, तो वह लोगों की संपत्ति लेकर मुसलमानों को बांट देगी। वह माताओं और बहनों के मंगलसूत्र भी बेच देगी। इस बयान के बाद ही देश का माहौल गरमाया दुआ है।

पीएम के अनुसार, ममोहन सरकार ने कहा था कि संपत्ति पर पहला अधिकार मुसलमानों का है। अब सबाल उठता है आखिर इन चुनावों में भाजपा और कांग्रेस का सबसे बड़ा मुद्दा क्या है? क्या विपक्ष भी मुस्लिमों को मुख्यधारा में रखने से परहेज कर रहा है? लोगों के दावे के अनुसार भाजपा का प्रिक्लो दिस साल का कामकाज बेतर रहा है। तो क्या यह माना जाए कि भाजपा किए गए काम के बोते लोगों से बोट मांग रही है या फिर हिंदुत्व के मसले पर। योद्धाओं में राम मंदिर मोदी सरकार के कामकाल में ही बांदा है। दिस में इस बजह से भी भाजपा के प्रक्षम में लहर बनी हुई मानी जा सकती है, लेकिन क्या कांग्रेस बार्कें मुसलमानों को अपना चुनावी बोट बैंक मानती है? यह भी सोचने वाली बात है।

भाजपा ने कांग्रेस के घोषणा पत्र पर ही सबाल उठा दिया है। इस बात पर कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने पलटवार करते हुए कहा कि भाजपा और पीएम मोदी भारत की जनता को असल मुद्दों से भटकाने का काम कर रहे हैं। कांग्रेस के घोषणा पत्र में अंथित असमानताओं के मुद्दे पर प्रकाश डाला गया है। इसमें किसी से कुछ लेकर बाटने की बात नहीं कही गई है। ‘व्यापक सामाजिक अर्थकालीन जाति जनगणना’ का समर्थन किया गया है। कांग्रेस ने प्रधानमंत्री को चुनौती दी है कि उनके घोषणा पत्र में कहाँ भी हिंदू मुसलमान लिखा हो तो दिखा दें। कांग्रेस युवाओं, महिलाओं, किसानों, आदिवासियों, मध्यम वर्ग और अनियन्त्रिकों को न्याय देने की बात कर रही है। चाहे हाल साल दो केरोड़ नैकरियों देने का बाद हो या महांगई कम करने का बाद हो, इन मसलों पर बहुत होनी चाहिए, नहीं तो जनता भी नेताओं के जुलमी ही कारोबार दीगी। किसी भी नेता को बोट की खातिर छाड़ नहीं बोलना चाहिए, बरना वह बड़ा मुद्दा बन जाता है। यही बजह है कि 2024 का चुनाव भाजपा बनाना जनता का चुनाव बन गया है।

विपक्षी गठबंधन एक जुटौ और मजबूत होने का दम भर रहा है। भाजपा इसे लेकर भी प्रचार कर रही है। दूसरी ओर कांग्रेस यह दावा कर रही है कि पहले चरण के चुनाव में जिस प्रकार जनता के पक्ष में उत्साह दिखाया, उससे भाजपा का प्रामाण है कि वह पहले चरण के चुनाव की हकीकत समझ चुके हैं, तभी वह ममोहन सिंह के बयान को 18 साल बाद इस चुनाव में उड़ाता रहे हैं। अफसोस है कि चुनाव आयोग अंख मंदिर के बैठा है। भारत विभिन्नता में एकता का देश है। यहां विपक्ष धर्म और पंथ को मानने वाले लोग हैं। सदियों से पूरे विश्व में इस बात से हमारी चर्चा हो रही है, हमें सराहा है।

आज देश के सामने सबसे बड़ा मुद्दा बोरेजारी और महांगई है। नेताओं को चाहिए कि वह मुद्दों को लेकर जनता के बीच जाए। एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाने से विवर पटल पर भारत की भद्र रिपट रही है। जनता के साथ छलाना नहीं होना चाहिए। अपनिवार योंजना के नाम पर युवाओं का करियर चौपट नहीं होना चाहिए। पेपर लीक की बढ़वाई घटनाओं ने युवाओं का भरोसा तोड़ा है। ऐसे मुद्दों से जनता को अवातर करवाया जाना चाहिए। उम्मीद की जानी चाहिए कि अनेक लोग समय में देश की राजनीति दोपारोपण मुक्त होंगी।

वाजिब सबाल यह है कि आखिर चुनाव के बीच नक्सल और सुशक्तिलों के बीच चले इस संघर्ष को राजनीति रांगे देने में जिसका भला होगा? पूर्वश बैलेट तो मुटभेड़ की फौजी भी बात रही है। इसे यह विस्तृत हो जाता है।

वाजिब सबाल यह है कि आखिर चुनाव के बीच नक्सल और सुशक्तिलों के बीच चले इस संघर्ष को राजनीति रांगे देने में जिसका भला होगा? पूर्वश बैलेट तो मुटभेड़ की फौजी भी बात रही है। इसे यह विस्तृत हो जाता है।

वाजिब सबाल यह है कि आखिर चुनाव के बीच नक्सल और सुशक्तिलों के बीच चले इस संघर्ष को राजनीति रांगे देने में जिसका भला होगा? पूर्वश बैलेट तो मुटभेड़ की फौजी भी बात रही है। इसे यह विस्तृत हो जाता है।

वाजिब सबाल यह है कि आखिर चुनाव के बीच नक्सल और सुशक्तिलों के बीच चले इस संघर्ष को राजनीति रांगे देने में जिसका भला होगा? पूर्वश बैलेट तो मुटभेड़ की फौजी भी बात रही है। इसे यह विस्तृत हो जाता है।

वाजिब सबाल यह है कि आखिर चुनाव के बीच नक्सल और सुशक्तिलों के बीच चले इस संघर्ष को राजनीति रांगे देने में जिसका भला होगा? पूर्वश बैलेट तो मुटभेड़ की फौजी भी बात रही है। इसे यह विस्तृत हो जाता है।

वाजिब सबाल यह है कि आखिर चुनाव के बीच नक्सल और सुशक्तिलों के बीच चले इस संघर्ष को राजनीति रांगे देने में जिसका भला होगा? पूर्वश बैलेट तो मुटभेड़ की फौजी भी बात रही है। इसे यह विस्तृत हो जाता है।

वाजिब सबाल यह है कि आखिर चुनाव के बीच नक्सल और सुशक्तिलों के बीच चले इस संघर्ष को राजनीति रांगे देने में जिसका भला होगा? पूर्वश बैलेट तो मुटभेड़ की फौजी भी बात रही है। इसे यह विस्तृत हो जाता है।

वाजिब सबाल यह है कि आखिर चुनाव के बीच नक्सल और सुशक्तिलों के बीच चले इस संघर्ष को राजनीति रांगे देने में जिसका भला होगा? पूर्वश बैलेट तो मुटभेड़ की फौजी भी बात रही है। इसे यह विस्तृत हो जाता है।

वाजिब सबाल यह है कि आखिर चुनाव के बीच नक्सल और सुशक्तिलों के बीच चले इस संघर्ष को राजनीति रांगे देने में जिसका भला होगा? पूर्वश बैलेट तो मुटभेड़ की फौजी भी बात रही है। इसे यह विस्तृत हो जाता है।

वाजिब सबाल यह है कि आखिर चुनाव के बीच नक्सल और सुशक्तिलों के बीच चले इस संघर्ष को राजनीति रांगे देने में जिसका भला होगा? पूर्वश बैलेट तो मुटभेड़ की फौजी भी बात रही है। इसे यह विस्तृत हो जाता है।

वाजिब सबाल यह है कि आखिर चुनाव के बीच नक्सल और सुशक्तिलों के बीच चले इस संघर्ष को राजनीति रांगे देने में जिसका भला होगा? पूर्वश बैलेट तो मुटभेड़ की फौजी भी बात रही है। इसे यह विस्तृत हो जाता है।

वाजिब सबाल यह है कि आखिर चुनाव के बीच नक्सल और सुशक्तिलों के बीच चले इस संघर्ष को राजनीति रांगे देने में जिसका भला होगा? पूर्वश बैलेट तो मुटभेड़ की फौजी भी बात रही है। इसे यह विस्तृत हो जाता है।

वाजिब सबाल यह है कि आखिर चुनाव के बीच नक्सल और सुशक्तिलों के बीच चले इस संघर्ष को राजनीति रांगे देने में जिसका भला होगा? पूर्वश बैलेट तो मुटभेड़ की फौजी भी बात रही है। इसे यह विस्तृत हो जाता है।

वाजिब सबाल यह है कि आखिर चुनाव के बीच नक्सल और सुशक्तिलों के बीच चले इस संघर्ष को राजनीति रांगे देने में जिसका भला होगा? पूर्वश बैलेट तो मुटभेड़ की फौजी भी बात रही है। इसे यह विस्तृत हो जाता है।

वाजिब सबाल यह है कि आखिर चुनाव के बीच नक्सल और सुशक्तिलों के बीच चले इस संघर्ष को राजनीति रांगे देने में जिसका भला होगा? पूर्वश बैलेट तो मुटभेड़ की फौजी भी बात रही है। इसे यह विस्तृत हो जाता है।

वाजिब सबाल यह है कि आखिर चुनाव के बीच नक्सल और सुशक्तिलों के बीच चले इस संघर्ष को राजनीति रांगे देने में जिसका भला होगा? पूर्वश बैलेट तो मुटभेड़ की फौजी भी बात रही है। इसे यह विस्तृत हो जाता है।

वाजिब सबाल यह है कि आखिर चुनाव के बीच नक्सल और सुशक्तिलों के बीच चले इस संघर्ष को राजनीति रांगे देने में जिसका भला होगा? पूर्वश बैलेट तो मुटभेड़ की फौजी भी बात रही है। इसे यह विस्तृत हो जाता है।

वाजिब सबाल यह है कि आखिर चुनाव के बीच नक्सल और सुशक्तिलों के बीच चले इस संघर्ष को राजनीति रांगे देने में जिसका भला होगा? पूर्वश बैलेट तो मुटभेड़ की फौजी भी बात रही है। इसे यह विस्तृत हो जाता है।

वाजिब सबाल यह है कि आखिर चुनाव के बीच नक्सल और सुशक्तिलों के बीच चले इस संघर्ष को राजनीति रांगे देने में जिसका भला होगा? पूर्वश बैलेट तो मुटभेड़ की फौजी भी बात रही है। इसे यह विस्तृत हो जाता है।

वाजिब सबाल यह है कि आखिर चुनाव के बीच नक्सल और सुशक्तिलों के बीच चले इस संघर्ष को राजनीति रांगे देने में जिसका भला होगा? पूर्वश बैलेट तो मुटभेड़ की फौजी भी बात रही ह

